IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हिंदी शोध की उपलब्धियां एवं सीमाएं

पूनम - पीएचडी शोधार्थी (हिंदी विभाग गुरुकुल कन्या परिसर)

संबंध गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार उत्तराखंड

भूमिका-

शिक्षा जीवन पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है। व्यक्ति औपचारिक एवं अनौपचारिक साधनों से शिक्षा प्राप्त करता है। शिक्षा व्यक्ति की प्रकृति तथा प्रदत्त शक्तियों का विकास करती है। शिक्षा के इस योगदान के कारण समाज में उसे महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है, समाज के बदलते स्वरूप के कारण जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अनेक संभावनाएं और समस्याएं जन्म ले रही है। इन भावनाओं और समस्याओं की खोज तथा समाधान, शैक्षिक अनुसंधानो द्वारा ही संभव है। इन संभावनाओं को निष्कर्ष पर ले जाना शोध के चरण है। शैक्षिक-अनुसंधान शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में उठने वाले प्रश्नों में निहित क्यों और कैसे को खोजने, कार्य कारण संबंधो की व्याख्या करने को प्रेरित करते हैं। अनुसंधान के द्वारा ही ने सिद्धांतों की खोज तथा पुराने सिद्धांतों की समीक्षा भी संभव है।

हिंदी के क्षेत्र में हुए अनुसंधान (शोध) ने हिंदी भाषा के स्तर को ऊंचा उठाया तथा हिंदी के क्षेत्र में नई खोज की। इन खोजो की सहायता से ही हिंदी काल को क्रमबद्ध किया जा सका है, भाषा के क्षेत्र में शोध के कारण ही भाषाओं का संरक्षण हो पाया है। शोध के कारण ही हिंदी के क्षेत्र में निरंतर विकास देखने को मिलता रहा है।

शोध का स्वरूप-

शोध शब्द का अर्थ है सत्य की खोज के लिए व्यवस्थित प्रयत्न करना या प्राप्त ज्ञान की परीक्षा के लिए व्यवस्थित प्रयत्न करना भी शोध कहलाता है। दूसरे शब्दों में यूं कहा जाए कि वैज्ञानिक पद्धति या वैज्ञानिक प्रणाली द्वारा सत्य की खोज करना, प्राप्त ज्ञान की परीक्षा करना या ज्ञान प्राप्त करने का निरंतर प्रयास करना ही शोध है। तथ्यों का अवलोकन करके कार्य कारण संबंध ज्ञात करना अनुसंधान की प्रमुख प्रक्रिया है।[1]

"नवीन ज्ञान की प्राप्ति के लिए किए गए व्यवस्थित प्रयत्न को हम शोध का अनुसंधान कहते हैं।"[2] रैडमैन तथा मोरी के अनुसार

"कोई भी साहित्यिक सत्य जब परिष्कृत, प्रमाणित, संदेहरहित और तथ्य पूर्ण होकर सामने आता है, तब वह का परिणाम बनता है।"[3] डॉ देवराज उपाध्याय

[1] दयाल, डॉ. मनोज, मीडिया शोध, हरियाणा साहित्य अकादमी, प्रथम संस्करण 2003, पृष्ठ सं.1

[2] दयाल, डॉ. मनोज, मीडिया शोध, हरियाणा साहित्य अकादमी, प्रथम संस्करण 2003, पृष्ठ सं.1

[3] सिंह, डॉ.तिलक, नवीन शोध विज्ञान, प्रकाशन संस्थान, संस्करण 2010, पृष्ठ सं.18

"भली-भांति व्याख्या सहित परिकल्पना या समस्या को हल करने की व्यवस्थित तथा तटस्थ प्रक्रिया का नाम है शोध है।"[4] डॉ विनय मोहन शर्मा

शोध कार्य ग्रंथ-लेखन, निबंध-लेखन, आलोचना-लेखन तथा सृजन-कार्य से नितांत भिन्न है। उक्त सभी कार्य लेखक के व्यक्तित्व से प्रभावित रहते हैं परंतु शोध कार्य पक्षियों से प्रभावित रहता है। पहला आत्म निष्ठ है, दूसरा वस्तुनिष्ठ। पहले कार्यों में लेकर की मान्यताएं प्रधान रहती हैं। दूसरे में तथ्यों की प्रधानता रहती है। पहले कार्य वर्ग-ग्राह्य होते हैं, दूसरा सर्व-ग्राह्य। पहले व्यक्ति से शासित रहते हैं, दूसरा वस्तु से अनुशासित। शोध का क्षेत्र उतना ही विस्तृत है जितना ज्ञान का क्षेत्र। ज्ञान के सभी रूप शोध-क्षेत्र में आते हैं। प्राकृतिक विज्ञान तथा समस्त मानव-विज्ञान शोध क्षेत्र के विषय हैं। ज्ञान-विज्ञान की समस्त सूक्ष्मताए शोध योग्य हैं। साहित्य तथा साहित्येतर पर विशेष सभी शोध के विशिष्ट क्षेत्र हैं। शिष्ट साहित्य, लोक साहित्य, हस्तलिखित साहित्य तथा मौखिक साहित्य शोध के मूल्य विवेच्य हैं। भारतीय साहित्य तथा विश्व साहित्य सभी शोधव्य हैं। भारतीय मनीषियों ने सृष्टि के समस्त ज्ञान को तीन रूपों में संगठित किया हैं।

1. काव्य रूप
2. शास्त्र रूप
3. पुराण तथा इतिहास रूप।

उक्त तीनों रूप शोध के क्षेत्र हैं। विश्व का समस्त साहित्य प्रथम रूप में समाहित हो जाता है। समस्त प्राकृतिक विज्ञान तथा अन्य मानव विज्ञान द्वितीय क्षेत्र में आ जाते हैं। समस्त काव्य रूप तथा शास्त्र रूपों के विकास का अध्ययन तृतीय कोटि में अंतरभुक्त है इस प्रकार का उक्त ज्ञान के समस्त विषयक शोध क्षेत्र का निर्माण करते हैं।

हिंदी शोध के आयाम और पक्ष-

हिंदी शोध क्षेत्र की बात करें तो आज हिंदी का क्षेत्र बहुत बड़ा हो चुका है। हिंदी शोध आज बहुमुखी एवं बहुआयामी हो गया है। जहां हिंदी आधुनिक विद्वानों शास्त्रो तथा कलाओं को छू रही है, वहीं दूसरी ओर निरंतर इसका विस्तार हो रहा है। हिंदी के क्षेत्र में व्याकरण, भाषा विज्ञान, भाषाओं बोलियों के परिपेक्ष तथा लोक साहित्य के अनेक दायरे हिंदी के शोध में नए आयाम निश्चित कर रहे हैं। पहले समय में शोधार्थियों को साहित्य के अंतर्गत अनुसंधान के लिए अनुशीलन प्रशिक्षण मूल्यांकन अथवा नव संकलनों पर आश्रित रहना होता था, परंतु बौद्धिक युग की प्रगति के साथ-साथ साहित्यिक के युग में विकास हुआ है। वैज्ञानिक दृष्टि से साहित्य के मनोवैज्ञानिक, शैली वैज्ञानिक, राजनैतिक या औद्योगिक पक्षों को भी शोध में उजागर किया गया है। समाजशास्त्रीय शोध में मध्यवर्गीय, उच्च वर्गीय, संबंधों के विघटन संबंधी, नारी संबंधी, रीति-रिवाजों, पर्वोत्सवों, जीवन द्वन्द्वों, युवा आक्रोश, यौन विकारों और ना जाने कितने विषयों पर साहित्यिक कार्य किए जा रहे हैं। सांस्कृतिक शोध मानव मूल्यों का विषय उठा रहे हैं। शोध अध्ययन की धारा को बांधा नहीं जा सकता समय के साथ में विषयों का समावेश होता है। आज साहित्य की किसी भी विधा में श्रंगार, वीर, करुणा, वात्सल्य, हास्य, व्यंग आदि सभी में शोध कार्य किए जा सकते हैं। अनूदित, तुलनात्मक या प्रवृतिजन्य साहित्य मूल्यांकन भी किया जा सकता है। आज हिंदी साहित्य शोध से छूटा कोई भी क्षेत्र नहीं रह गया। सभी क्षेत्रों में हिंदी शोध ने अपना स्थान बनाया है।

हिंदी साहित्य आज बहुपक्षीय हो गया है सहज ही नए आयामों की खोज व स्थापना कर रहा है। अध्ययन और शोध धारणाएं, सृजन की पूर्व दिशाएं एवं अतीत की परिस्थितियां अब बदल रही हैं। वर्तमान में हिंदी पुरातनता का को समेटे हुए जटिल नवीन विविध विषयों को अंगीकार कर रही है। आज साहित्य में बदलते हुए जीवन मूल्य वह नैतिक मानो, अस्तित्व की खोज में भटकते मानवों, दुविधा और द्वंद में अंतर संघर्ष करते हुए व्यक्तियों लोगों की भीड़ में अकेलेपन के बोझ से आतंकित जिंदगीयों और टूटते संबंधों के पारावार में बेपतवार नौका की नई डगमगाती उमंगों से सजग चित्र सृजन के नवीन आयाम ही तो हैं। बहुत सहज ही क्षेत्र में परिप्रेक्ष्य में शोध जन्म लेगा और वहाँ नए आयाम जुड़ेंगे।

[4] सिंह, डॉ.तिलक, नवीन शोध विज्ञान, प्रकाशन संस्थान, संस्करण 2010, पृष्ठ सं.18

हिंदी साहित्य में शोध के आयामों में भाषा बोली संबंधी अध्ययनों, व्याकरण, संरचना, भाषा विज्ञान, शैली विज्ञान, सौंदर्यशास्त्र, रस-अलंकार जैसे विषय अपनाए जा रहे हैं। प्रादेशिक भाषाओं के साहित्य पर भी शोध किए जा रहे हैं । अज्ञात रचनाओं की खोज तथा उनका पाठ्य लोचन शोध का नया आयाम कहा जा सकता है जैसे सुरती मिश्र तथा हरि चरण दास की कृतियों का उद्घाटन हिंदी शोध आयाम है। इसी के अंतर्गत अंतर अनुशासनिक उपागम भी नया शोध आयाम है जिसमें सूक्ष्मातिसूक्ष्म स्तर उस पर खोज की जाती है।[5]

हिंदी शोध (अनुसंधान) का इतिहास

हिंदी शोध के इतिहास की जानकारी सर्वप्रथम हिंदी साहित्य और हिंदी भाषा पर विदेशी विश्वविद्यालयों में हुए शोध कार्यों से प्राप्त होती है। हिंदी शोध पर कार्य करने वाले प्रथम शोधकर्ता है भी अहिंदीभाषी लोग ही थे। हिंदी के क्षेत्र में हुए शोध आरंभिक शोध ग्रंथ, विषय विस्तार, विश्लेषण स्थूलता, विवेचन शैली की साहित्यिकता तथा समन्वित शैली तथा शोध व्यवस्था की अनिश्चितता के कारण परवर्ती शोध कार्यों के स्वस्थ, प्रगतिशील तथा आदर्श शोध मार्ग प्रशस्त करने में असमर्थ रहे हैं।

1. हिंदी के क्षेत्र में प्रथम शोध फ्लोरेंस विश्वविद्यालय के स्नातक **श्रीयुत लुइजि पिओ तेसीतरी** ने सन् 1911 ई. में इटैलियन भाषा में **'इल रामचरितमानस ए इल रामायण'** विषय पर एक लेख लिखकर किया इस लेख की बहुत प्रशंसा हुई। इस लेख के लिए तेसीतरी को शोध उपाधि प्राप्त हुई।

2. दूसरा शोध कार्य लंदन में सन् 1918 में **श्री जे. एन.कारपेन्टर** ने **दाथियोलॉजी ऑफ तुलसीदास** (तुलसीदास का धर्म दर्शन) विषय पर प्रस्तुत किया।

3. तीसरा शोध प्रबंध **'हिंदुस्तानी फॉनेटिक्स'** सन् 1930 में **श्री मोहिउद्दीन कादरी** द्वारा प्रस्तुत किया गया। यह उर्दू भाषा में प्रमाणित शोध ग्रंथ रहा लंदन विश्वविद्यालय से उक्त विषय में उपाधि प्राप्त की।

4. **श्री बाबूराम सक्सेना** ने सन् 1971 ई में **'इवोल्यूशन ऑफ अवधि'** (अवधि का विकास) विषय पर प्रयाग विश्वविद्यालय में शोध प्रबंध प्रस्तुत किया। इस शोध विषय पर उनको डी. लिट की उपाधि प्रदान की गई। पहला हिंदी का शोध प्रबंध था जो किसी हिंदी विश्वविद्यालय में प्रस्तुत किया गया था।

5. सन् 1934 ई में **श्री पीतांबर दत्त बड़थ्वाल** ने हिंदी विश्वविद्यालय काशी में **'दा निर्गुण स्कूल ऑफ हिंदी पोएट्री'** (हिंदी काव्य में निर्गुण संप्रदाय) शोध प्रबंधन पर डी लिट की उपाधि प्राप्त की थी यह हिंदी विषय पर हिंदी विभाग में प्रस्तुत प्रथम शोध प्रबंध माना जाता है।

6. सन् 1934 ईस्वी में **जनार्दन मिश्र** में **'सूरदास का धार्मिक काव्य'** शोध विषय पर कोनिग्सबर्ग विश्वविद्यालय से शोध उपाधि प्राप्त की थी।

7. **श्री धीरेंद्र वर्मा** का शोध प्रबंध **'ल लॉगव्रज'** (ब्रजभाषा) सन् 1935 ई में पेरिस विश्वविद्यालय से डी. लिट की उपाधि के लिए स्वीकृत किया गया।[6]

सन 1911 से 1935 तक कुल 7 शोध प्रबंधन प्रस्तुत किए गए जिसमें से 5 शोध विदेशी, 2 शोध उपाधियों हिंदी विश्वविद्यालय में, 3 शोध प्रबंध में डी.लिट की उपाधि मिली। हिंदी शोध का द्वितीय काल सन 1935 से 1947 तक माना जाता है। इसे हिंदी शोध का विकास काल कहते हैं। इसी समय काशी, प्रयाग, नागपुर, पंजाब और आगरा जैसे 5 विश्वविद्यालयों में दी, भाषा, साहित्य, संस्कृति, काव्यशास्त्र, काव्यधारा पर शोध कार्य संपन्न हुऐ।

[5] सहगल, डॉ.मनमोहन, हिन्दी शोधतंत्र की रूपरेखा, पंचशील प्रकाशन, संस्करण 2008, पृष्ठ सं.85

[6] सिंह, डॉ.तिलक, नवीन शोध विज्ञान, प्रकाशन संस्थान, संस्करण 2010, पृष्ठ सं.235,236

1946 से 47 में कोलकत्ता, पटना और लखनऊ में शोध कार्य शुरू हुए। इन सभी विश्वविद्यालयों में कुल 29 शोध प्रबंधन लिखे गए। यह शोध कार्य विषय निर्वाचन, तथ्य नियोजन तथा शोध तकनीकी दृष्टि से प्रथम काल के शोध कार्यों से अधिक स्पष्ट निश्चित तथा श्रेयस्कर हैं। दूसरे काल के शोध अधिक प्रमाणिक तथा वैज्ञानिक हैं।

स्वतंत्रता के बाद 1948 से हिंदी शोध का विस्तार काल शुरू होता है। आजादी के बाद भारतीयों में अध्ययन अध्यापन की अभिरुचि का निर्माण हुआ। हिंदी राष्ट्रीय भाषा बनने की ओर आगे बढ़ी तो हिंदी के क्षेत्र में शोध छात्रों की संख्या में वृद्धि हुई। बहुत से हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। पटना और प्रयाग विश्वविद्यालय में एक प्रश्न पत्र एम.ए हिंदी अनिवार्य कर दिया गया। हिंदी में संपन्न शोध कार्य द्वारा भारतीय संस्कृति के सजातीय तथा निजातीय रचना सूत्र स्पष्ट तथा स्थापित किए जा सकते हैं। इस काल में ही अन्तर्विधायी शोध कार्यों का शुभारंभ भी हुआ अन्तर्विधायी शोध को दो भागों में बांटा गया है।

1. हिंदी साहित्यानुसंधान

2. हिंदी भाषानुसंधान[7]

हिंदी साहित्यानुसंधान को साहित्य तत्वों,प्रवृत्ति तथा प्रभावों के आधार पर विभिन्न भागों में बांटा जा सकता है हिंदी भाषानुसंधान के पांच अंग-ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य तथा अर्थ हैं। हिंदी साहित्य तथा भाषा का वर्णनात्मक, तुलनात्मक, ऐतिहासिक तथा क्षेत्रीय आधार पर शोध कार्य किया जा सकता है। इस शोध में मनोभाषावैज्ञानिक, समाजभाषावैज्ञानिक तथा राजनीतिक भाषावैज्ञानिक शोधकार्य के लिए उपयुक्त स्थान है।

इसी अवधि में काव्यशास्त्रीय, जीवन वृत्तीय, प्रभावपरक, सांस्कृतिक, शैली वैज्ञानिक आदि शोध कार्यों का आरंभ हो गया है। प्रवृत्तिपरक, व्यक्तित्व कृतित्व संबंधी, समाजशास्त्रीय, मनोवैज्ञानिक, विशिष्ट साहित्यकार, रचनाओं के संबंध में पर शोध कार्य भी हो रहे हैं।

उपयुक्त शोध कार्य को दो भागों में बांट सकते हैं।

1. स्वाधीनता पूर्व से शोध कार्य

2. स्वाधीनता पश्चात के शोध कार्य[8]

प्रथम प्रकार के शोध कार्य गुणात्मक दृष्टि से उत्तम होते हुए परिमाणात्मक दृष्टि से सीमित हैं। वहीं दूसरे का प्रकार के शोध कार्य में विषय की भरमार रही है भक्तिकालीन विषयों पर सर्वाधिक शोध हुए हैं। तुलसी पर संतोषजनक शोध कार्य हुए, कहानी, नाटक, एकांकी, आलोचना, निबंध यात्रा साहित्य और पत्रकारिता आदि पर भारतवर्ष में शोध कार्य हो रहे हैं।

हिंदी शोध की उपलब्धियां-

हिंदी शोध के क्षेत्र में आजादी से पूर्व शोध प्रबंध बहुत कम मिलते हैं परंतु 1947 के बाद हिंदी शोध क्षेत्र में विकास बहुत तीव्र गति से देखने को मिला। एक हज़ार वर्षों से लंबे काल के हिंदी साहित्य को मात्र 70 वर्षों में पूर्ण नहीं किया जा सकता, यही कारण है कि 1947 के बाद विश्वविद्यालयों में हिंदी विभाग में शोधार्थियों की भरमार है। हिंदी साहित्य के क्षेत्र में रोज शोध ग्रंथ तैयार करने का प्रयास किया जा रहा है।फिर भी हिंदी शोध क्षेत्र नित नवीन और ताजगी भरा है। हिंदी के क्षेत्र में शोध कार्य 70-75 वर्षों से ही शुरु हुआ है इसीलिए इनमें इतने व्यापक स्तर पर शोध कार्य होना स्वाभाविक ही है। अन्य भाषा के स्थान पर हिंदी भारतीय भाषा होने के कारण इसमें अनेक सुविधा प्राप्त है, इसीलिए भारतीय विद्वानों द्वारा हिंदी साहित्य को अपना शोध क्षेत्र चयनित करना अधिक सुविधाजनक है अंग्रेजी माध्यम के अनुरूप

[7] सिंह, डॉ.तिलक, नवीन शोध विज्ञान, प्रकाशन संस्थान, संस्करण 2010, पृष्ठ सं.71

[8] सिंह, डॉ.तिलक, नवीन शोध विज्ञान, प्रकाशन संस्थान, संस्करण 2010, पृष्ठ सं.238

हिंदी का शोधार्थी अधिक परिश्रम करता है अधिक स्रोत-ग्रन्थो को देखता, परखता है और मौलिक स्थापनाओं की अभिवृत्ति करता हैं यही हिंदी शोध की मुख्य उपलब्धि है।

हिंदी शोध कार्य की उपलब्धियां अनेक हैं। आजादी के बाद के वर्षों में अनेक नवीन कवि, हिंदी साहित्य, अज्ञात रचनाएं, प्रादेशिक लिपियों में लिखा काव्य खोजा जा चुका है। 70 वर्षों में ये नवीन खोजें इतनी बड़ी संख्या में सामने आई है कि विद्वानों को हिंदी काल को पुनः क्रमबद्ध करने की आवश्यकता जान पड़ती है। शोध में वैज्ञानिकता का के कारण में दिशाओं का उद्घाटन हुआ है।

प्राचीन और मध्यकालीन हिंदी साहित्य क्षेत्र में शोधोपलब्धियों के अतिरिक्त हिंदी शोध की सर्वाधिक उपलब्धि आधुनिक साहित्य में हुई है। शायद हिंदी को कोई पक्ष ऐसा हो जिस पर शोधार्थियों की नजर ना गई हो। यही कारण है कि समीक्षक और अनुसंधित्सु दोनों नयी जमीन तोड़ने में विश्वास रखते हैं काव्या, नाटक और कथा साहित्य की विभिन्न विधाओं में वे अपने कौशल का परिचय दे रहे हैं इसलिए हिंदी शोध की उपलब्धियां भी बहुमुखी हैं। इसका उदाहरण हमें विषय पर शोध विषय की संख्याओं से प्राप्त होता है।

1.	भाषा तथा बोली संबंधी शोध	250
2.	काव्य शास्त्रीय शोध	45
3.	काव्या सिद्धांत प्रयोग	140
4.	हिंदी कविता	150
5.	आधुनिक कविता	150
6.	नाटक	75
7.	उपन्यास	100
8.	अनुशीलन विवेचना	225
9.	परंपरा या धारा	8
10.	साहित्यिक सिद्धांतों का प्रयोग	25
11.	साहित्य समाज और नारी	90
12.	लोक साहित्य	85
13.	पंथ और संप्रदाय	50
14.	तुलनात्मक अध्ययन	150
15.	प्रकीर्ण या विविध	100

प्रस्तुत तालिका से स्पष्ट है कि हिंदी शोध बहुत बड़ी संख्या में किया जा रहा है। जिसके लिए भारतीय हिंदी परिषद में सन 1976 में 'हिंदी अनुशीलन'का शोध विशेषांक प्रकाशित करके हिंदी शोध की उपलब्धि पर प्रकाश डाला है।[9]

निम्न शोधो को काल के अनुसार लिखा गया है।

1.	आदिकाल	78

[9] सहगल, डॉ.मनमोहन, हिन्दी शोधतंत्र की रूपरेखा, पंचशील प्रकाशन, संस्करण 2008, पृष्ठ सं.87,88

2.	मध्यकालीन	68
3.	भक्ति काल	135
4.	संत साहित्य	97
5.	विभिन्न संत कवि	179
6.	राम काव्य	49
7.	तुलसीदास	142
8.	कृष्ण काव्य	85
9.	रीतिकालीन कवि	142
10.	आधुनिक काव्य	177

इस क्रम में '**हिंदी अनुशीलन**' शोध विशेषांक में **3161** शोध प्रबंधन ओं की सूची प्रस्तुत की गई जिससे यह सिद्ध होता है कि हिंदी शोध की उपलब्धियां बहुत बड़ी हैं। इसमें 50 वर्षों के भीतर ही 4000 से ज्यादा पीएचडी की उपाधि हेतु शोध पर बंद लिखे जा चुके हैं। इन शोधो में एक हज़ार वर्ष का हिंदी साहित्य तथा स्वयं भाषा और उसकी बोलियों पर अनुशीलन, परीक्षण या मूल्यांकन युक्त साहित्य भी बहुत व्यापक है।[10]

इन शोध प्रबंधनो को शोधार्थियों ने अपने जीवन से खींचा है।शोध के प्रत्येक पक्ष को उजागर किया है, अनेक नवीन तथ्यों को प्रकट किया है। इन सभी शोध प्रबंधकों ने हिंदी साहित्य की उन्नति की ओर हिंदी को गर्व पूर्वक स्थान दिया उपरोक्त सभी शोध हिंदी की उपलब्धियां हैं।

हिंदी शोध की सीमाएं

शोधार्थी ज्ञान का उपासक है ज्ञान के विशुद्ध रूप का उपस्थापक है। जिस विषय पर शोध कार्य करता है उसे देखना होता है कि उन विषयों पर अब तक किस प्रकार का, कितना, किस दिशा में और किस पद्धति में कार्य हुआ है। शोधार्थी को शोध निमित गृहीत विषय में अद्यावधि संपन्न कार्य को ध्यान में रखते हुए कुछ नया जोड़ना होता है। निर्वाचित विषय की ज्ञान चित्र की सीमाओं को विस्तृत करना होता है शोध का यह लक्ष्य हैं।

1. शोध के आकार का नियमन विषय निर्वाचन की प्रकृति तथा प्रकार्यता पर निर्भर हैं।
2. शोध का विषय साहित्यिक है तो आकार बहुत बड़ा होगा।
3. विषय काव्यशास्त्र, पाठानुसंधान या भाषा- विज्ञान पर है तो आकार छोटा होगा।
4. हिंदी शोध में लिंग विधान का विस्तृत होगा।
5. शोध की शैली वैज्ञानिक होनी चाहिए।
6. शोध समय, काल, लेखक निर्धारित होना चाहिए।
7. शोध में प्रमाणित तथ्यों की मान्यता होती है।

[10] सहगल, डॉ.मनमोहन, हिन्दी शोधतंत्र की रूपरेखा, पंचशील प्रकाशन, संस्करण 2008, पृष्ठ सं.91

शोध की सीमाएं शोध विषय द्वारा निर्धारित की जाती हैं शोध के विषय का सीधा प्रभाव शोध के आकार पर पड़ता है। इस प्रकार विषय, काल और लेखक शोध की सीमाएं हैं।

निष्कर्ष

शोध में इतनी बड़ी (5000 से ज्यादा) संख्या में शोध कार्य हो चुका है कि इन शोध कार्य में नित हिंदी भाषा का विस्तार हो रहा है। अपने 70 वर्ष के विस्तार में अभी तो आधे से भी कम हैं और अभी बहुत से क्षेत्र ऐसे हैं जिन पर शोध कार्य किया जाना बाकी है कुछ विषय क्षेत्र ऐसे हैं जो नऐ शोधार्थी की राह देख रहे हैं परंतु रोज नए शोधों के कारण हिंदी भाषा नित नवीन होती जा रही है। शोध के विषयों के साथ उसकी सीमाएं भी निर्धारित करना जरूरी है ताकि शोध उबाऊ और बिखरा ना लगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1.दयाल, डॉ. मनोज, मीडिया शोध, हरियाणा साहित्य अकादमी, प्रथम संस्करण 2003, पृष्ठ सं.1

2.दयाल, डॉ. मनोज, मीडिया शोध, हरियाणा साहित्य अकादमी, प्रथम संस्करण 2003, पृष्ठ सं.1

3.सिंह, डॉ.तिलक, नवीन शोध विज्ञान, प्रकाशन संस्थान, संस्करण 2010, पृष्ठ सं.18

4. सिंह, डॉ.तिलक, नवीन शोध विज्ञान, प्रकाशन संस्थान, संस्करण 2010, पृष्ठ सं.18

5.सहगल, डॉ.मनमोहन, हिन्दी शोधतंत्र की रूपरेखा, पंचशील प्रकाशन, संस्करण 2008, पृष्ठ सं.85

6.सिंह, डॉ.तिलक, नवीन शोध विज्ञान, प्रकाशन संस्थान, संस्करण 2010, पृष्ठ सं.235,236

7.सिंह, डॉ.तिलक, नवीन शोध विज्ञान, प्रकाशन संस्थान, संस्करण 2010, पृष्ठ सं.71

8.सिंह, डॉ.तिलक, नवीन शोध विज्ञान, प्रकाशन संस्थान, संस्करण 2010, पृष्ठ सं.238

9.सहगल, डॉ.मनमोहन, हिन्दी शोधतंत्र की रूपरेखा, पंचशील प्रकाशन, संस्करण 2008, पृष्ठ सं.87,88

10.सहगल, डॉ.मनमोहन, हिन्दी शोधतंत्र की रूपरेखा, पंचशील प्रकाशन, संस्करण 2008, पृष्ठ सं.91

पुस्तक-

1.दयाल, डॉ. मनोज, मीडिया शोध, हरियाणा साहित्य अकादमी, प्रथम संस्करण 2003

2.सिंह, डॉ.तिलक, नवीन शोध विज्ञान, प्रकाशन संस्थान, संस्करण 2010

3.सहगल, डॉ.मनमोहन, हिन्दी शोधतंत्र की रूपरेखा, पंचशील प्रकाशन, संस्करण 2008,